एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 06 (नवंबर-दिसंबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

राजस्थान की मुख्य दलहनी फसलों के कीट तथा उनका प्रबन्धन

(*पूजा कुमारी, शकुंतला एवं सैफ अली खान)
राजस्थान कृषि अनुसन्धान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: poojaraokumari98@gmail.com

भारत में बड़ी संख्या में शाकाहारी लोग रहते है। जो अपनी दैनिक प्रोटीन मांग को पूरा करने के लिए शाकाहारी स्त्रोत पर निर्भर करते हैं। दाले उनमे से एक है जो लोगो की प्रोटीन एवं खनिज आपूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान निभाती है। राजस्थान के लगभग 6.41 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में दलहन की खेती की जाती है, जिसमे इनका उत्पादन एवं उपज (4.02 लाख टन एवं 627 किग्रा/हेक्टेयर, क्रमशः) होती है। दलहनो का उत्पादन खरीफ, रबी और जायद में 1.30, 2.70 लाख टन/हेक्टेयर एवं 2424 हेक्टेयर होता है। भारत दलहनी फसलों का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक (25%), उपभोक्ता (27%) और आयतक (14%) है। दलहनी फसले जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण में महत्वपूर्ण योगदान देती है। दालो में भरपूर मात्रा में प्रोटीन (20–25%), कार्बोहाइड्रेट (55–60%) कैल्सियम एवं आयरन पाया जाता है। इसलिए इन्हे ''गरीबो का माँस'' और ''अमीरो की सब्जी'' कहाँ जाता है। राजस्थान राज्य में मुख्य रूप से दालो में चवला, मूँग, मोठ, उडद, अरहर, ग्वार तथा चने की खेती की जाती है। खरीफ ऋतु के अन्तर्गत मुख्य रूप से चवला, मूँग, उडद, अरहर, ग्वार तथा मोठ आते है। रबी में मुख्यरूप से मटर व चना की खेती की जाती है तथा जायद ऋतु मे जिन किसानो के पास पानी की उचित व्यवस्था है वहां चवला, मूँग, तथा ग्वार की खेती की जाती है।

राजस्थान में दलहन उत्पादन कम होने के मुख्य कारण :

1. मुख्यत अधिकतम क्षेत्रफल वर्षा पर आधारित है।
2. बाजार मूल्य की अनिश्चितता।
3. बंजर जमीन पर खेती करना।
4. उन्नत किस्मों के बारे मे अज्ञानता।
5. रोग व कीटों के संक्रमण की उचित पहचान न कर पाना।

दलहनी फसलों की उत्पादकता में कमी का कारण मुख्य रूप से जैविक एवं अजैविक घटक होते है इनके कारण प्रतिवर्ष लगभग 15-20 प्रतिशत नुकसान दर्ज किया जाता है। दालों को कीटों से बचाने के लिए उनकी उचित पहचान एवं प्रबंधन अपनाना चाहिए। जिससे उत्पादन तथा उत्पादकता मे वृद्वि की जा सके।

दलहनी फसलों के मुख्य कीट तथा उनका प्रबन्धन :

1 **फली छेदक (*Helicoverpa armigera*)** : **फली छेदक** बहुभक्षी कीट है तथा यह मुख्यतः चना, मूँग, अरहर, चवला एवं उड़द मे लगता है। ये कीट मलाई (क्रीमी) रंग का एक गोलाकार अंडा देता है। इसकी लट हरे अथवा गहरे भूरे रंग की होती है। इसका व्यस्क रूप हल्का पीला, भूरे रंग का होता है। इसका लार्वा पत्तियों एवं फलियो गोलाकार छेद कर हानि पहुंचाता है। ये युवा पत्तियों को झाड़ देता है।

प्रबन्धन :

- खेतो मे फेरोमोन ट्रेप 12/हेक्टेयर की दर से लगाने चाहिये।
- रात को खेतो मे प्रकाश जाल लगाकर हाथो से परिपक्व लट को एकत्रित कर नष्ट किया जा सकता है।

- 2 सुंडी प्रति पौधे मिलने पर कीटनाशक दवाओ जैसे ईमोमेक्टीन बेंजोएट SC 2.75 ग्रा./10 ली. अथवा क्लोरेनट्रानिप्रोल 18.5 एस.सी. @ 3 मिली/10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। यदि आवष्कता हो तो दुसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल में करना चाहिए ।
- HaNPV (*हेलिकोवर्पा आर्मीजेरा* न्यूक्लियो पोलिहेड्रोसिस वायरस) @ 500 एल.ई./हेक्टेयर एवं *बेवेरिया बेसियाना* 1.15 डब्ल्यू.पी. @ 5 ग्राम/लीटर से बीज उपचार करना चाहिए ।

2 चित्तीदार फली छेदक (*Maruca vitrata*) : इस कीट के प्रकोप से युवा अवस्था में पत्तियों का झड़ना शुरू हो जाता है। इसकी लट पत्तियों में छेद कर नुकसान पहुँचाती है। इसका लार्वा सफेद हरे रंग व भूरे रंग का उसका सिर होता है। यह कीट मुख्यतः अरहर और मूँग मे नुकसान पहुँचाता है। इस कीट की सुडिया (Larva) फूल अवस्था के समय फूलो को नुकसान पहुँचाती है जिससे फूल गिर जाते है। यह कीट फलिया बनते समय फलियो मे छेद करके दाने खा जाते है।

प्रबन्धन : इस कीट के नियंन्त्रण के लिए 50 प्रतिशत फूल अवस्था के समय कीटनाशक का प्रयोग करना चाहिये जैसे इन्डोकसाकार्ब 15.8 EC 3.5 मिली/10 ली. अथवा स्पाईनोसेड 45 SC 1.6 मिली/10 ली. अथवा राईनोक्सीपायर 18.5 SC 1.5 मिली/10 ली. पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। यदि आवष्कता हो तो दूसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिये।

3 **फली मख्खी** (***Melanagromyza obtusa***) : यह कीट सामान्यत घरेलु मख्खी जैसी ही होती है। यह कीट मुख्य रूप से अरहर की फसल मे फलियो को नुकसान पहुँचाती है। फली मख्खी मुख्यतः फलियो के अन्दर अंडे देती है तथा सुण्डी दानो को नुकसान पहुँचाती है जिससे दाने अपरिपक्व अवस्था मे ही रह जाते है फलस्वरूप उपज मे भारी कमी होती है।

प्रबन्धन : फली मख्खी के नियन्त्रण लिए नीम के तेल 20 मिली/10 ली पानी मे मिलाकर फूल अवस्था तथा फलियो के बनते समय छिड़काव करना चाहिये। यदि कीट का प्रकोप अधिक मात्रा मे हो तो कीटनाशक दवा फ्लूर्बेन्डामाईड 3.1 मिली/10 ली पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।

रस चूसक कीट

1 सफेद मक्खी (***Bemisia tabaci***) : यह हल्के भूरे रंग की छोटी मक्खी होती है इसके पंखों पर मोम जैसा पाउडर बिखरा हुआ होता है। इस मक्खी के अभ्रक (Nymph) व व्यस्क पत्तियों की निचली सतह से रस चुसते हैं। जिसके पिरिणामस्वरन्प पत्तियाँ अंदर की तरफ मुड़ जाती है। ये शहद जैसा चिपचपा पदार्थ छोड़ती है। ये मक्खी दालों में पीला मोजेक वायरस स्थानान्तरित करती है।

2 पत्ती हॉपर (***Apheliona maculosa***) : यह हरे रंग का होता है और ये पत्तियों की निचली सतह पर पाया जाता है ये कीट युवा पत्तियों से रस चुसते है जिसके परिणामस्वरूप पत्तियाँ पीली और धब्बेदार दिखाई देती है। यह कीट मुख्यरूप से मूँग, अरहर, चवला, उड़द, ग्वार एवं मोठ मे हानि पहुँचाता है।

3 **फलि माहू** (***Aphis craccivora***) : इस कीट के व्यस्क चमकीले काले रंग के होते हैं। इसके अभ्रक और व्यस्क पत्तियों, तनों और फलियों से रस चुसते हैं पत्तियों को अधिक खाने की वजहा से पत्तियाँ पीली और मुरझा जाती है। यह मूंग में ककड़ी मोजेक वायरय स्थानान्तरित करता है। यह भी शहद जैसा चिपचपा पदार्थ छोड़ता है। जिस पर काले रंग की राख जैसी फफूँद लग जाती है। यह कीट मुख्यरूप से सभी दलहनी फसलो मे हानि पहुँचाता है।

रस चूसक कीटों का प्रबन्धन :

- सफेद मक्खी और फलि माहू के नियन्त्रण के लिए फसल में पीला चिपचिपा जाल (8–10/है.) लगाने चाहिए।
- कीटभक्षी का प्रयोग जैसे लेडी बर्ड बिट्ल्स, क्राइसोपरला कार्निया का उपयोग करना चाहिए।
- सफेद मख्खी के नियन्त्रण के लिए ईमीडाक्लोप्रीड 17.8 SC 5 मिली/10 ली. अथवा थायोमीथोकजाम 25 WG 3 ग्रा./10 ली पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- पत्ती हॉपर के नियंत्रण के लिए कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए जैसे थायोमीथोकजाम 25 WG 3 ग्रा/10 ली. अथवा मोनोक्रोटोफास 36 SL 10 मिली/10 ली. पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।